विनायक चतुर्थी : गणेश जी को समर्पित उत्सव

विनायक चतुर्थी का पर्व भगवान गणेश को समर्पित है। यह पर्व हिंदू धर्म के मानने वालों का मुख्य पर्व है। विनायक चतुर्थी को गणेशोत्सव के रूप में सारे विश्व में हर्षोल्लास व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। भारत में इसकी धूम यूं तो सभी प्रदेशों में होती है, परंतु विशेष रूप से यह महाराष्ट्र में मनाया जाता है। हिंदू धर्म में गुणेश चतुर्थी का विशेष स्थान है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान गणेश का जन्म हुआ था। इस अवसर पर लोग अपने घर, मंदिर और पूजा पंडालों में गणेश जी की प्रतिमा की स्थापना करते हैं और दस दिनों तक बड़ी ही धूमधाम के साथ उनकी पूजा अर्चना करते हैं। दसवें दिन अनंत चतुर्दशी पर गणपति की इन मूर्तियों का विसर्जन किया जाता है।

विनायक, संकष्टी एवं गणेश चतुर्थी

हिंदू कैलेंडर में प्रत्येक चंद्र मास में दो चतुर्थी होती है। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार चतुर्थी तिथि भगवान गणेश की तिथि है। अमावस्या के बाद आने वाली शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायक चतुर्थी कहते हैं और पूर्णिमा के बाद आने वाली कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को संकष्टी चतुर्थी कहते हैं। हालांकि विनायक चतुर्थी का व्रत हर महीने में होता है, लेकिन सबसे मुख्य विनायक चतुर्थी का व्रत भाद्रपद के महीने में होता है। भाद्रपद के दौरान पडने् वाली विनायक चतुर्थी को गणेश चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। संपूर्ण विश्व में गणेश चतुर्थी को भगवान गणेश के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है।

महाराष्ट्र का मुख्य पर्व

विनायक चतुर्थी के उत्सव को महाराष्ट्र का मुख्य पर्व भी कहा जा सकता है। इस दिन लोग मोहल्लों और चौराहों पर प्रथम पूज्य भगवान गणेशजी की मूर्ति की स्थापना करते हैं। आरती और भगवान श्री गणेश के जयकारों से सारा माहौल गूंज रहा होता है। इस उत्सव का अंत अनंत चतुर्दशी के दिन गणेश की मूर्ति समुद्र में विसर्जित करने के बाद होता है।

कथा

गणेश चतुर्थी व्रत को लेकर एक पौराणिक कथा प्रचलन में है। इस कथा के अनुसार एक बार भगवान शंकर और माता पार्वती नर्मदा नदी के निकट बैठे थे। वहां देवी पार्वती ने भगवान भोलेनाथ से समय व्यतीत करने के लिए चौपड़ का खेल खेलने को कहा। भगवान शंकर चौपड़ खेलने के लिए तैयार तो हो गए, परंतु इस खेल में हार-जीत का फैसला कौन करेगा, इसका प्रश्न उठा। इसके जवाब में भगवान भोलेनाथ ने कुछ तिनके एकत्रित कर उसका पुतला बनाकर, उस पुतले की प्राण प्रतिष्ठा कर दी और पुतले से कहा कि, 'बेटा हम चौपड़ खेलना चाहते हैं, परंतु हमारी हार-जीत का फैसला करने वाला कोई नहीं है। इसलिए तुम बताना कि हम में से कौन हारा और कौन जीता।'

चौपड़ का खेल

यह कहने के बाद चौपड़ का खेल प्रारंभ हो गया। खेल तीन बार खेला गया और संयोग से तीनों बार पार्वती जी जीत गईं। खेल के समाप्त होने पर बालक से हार-जीत का फैसला करने के लिए कहा गया तो बालक ने महादेव को विजयी बताया। यह सुनकर माता पार्वती क्रोधित हो गईं और उन्होंने क्रोध में आकर बालक को लंगड़ा होने व कीचड़ में पड़े रहने का श्राप दे दिया। बालक ने माता से माफी मांगी और कहा, 'मुझसे अज्ञानतावश ऐसा हुआ, मैंने किसी द्वेष में ऐसा नहीं किया।' बालक के क्षमा मांगने पर माता ने कहा, 'यहां गणेश पूजन के लिए नाग कन्याएं आएंगी, उनके कहे अनुसार तुम गणेश व्रत करो, ऐसा करने से तुम मुझे प्राप्त करोगे।' यह कहकर माता पार्वती भगवान शिव के साथ कैलाश पर्वत पर चली गईं।

गणेश का प्रसन्न होना

ठीक एक वर्ष बाद उस स्थान पर नाग कन्याएं आईं। नाग कन्याओं से श्री गणेश के व्रत की विधि मालूम करने पर उस बालक ने 21 दिन लगातार गणेश जी का व्रत किया। उसकी श्रद्धा देखकर भगवान गणेश प्रसन्न हो गए और उन्होंने बालक को मनोवांछित फल मांगने के लिए कहा। बालक ने कहा, 'हे विनायक! मुझमें इतनी शक्ति दीजिए कि मैं अपने पैरों से चलकर अपने माता-पिता के साथ कैलाश पर्वत पर पहुंच सकूं और वे यह देख प्रसन्न हों।' बालक को यह वरदान देकर भगवान गणेश अंतर्ध्यान हो गए। बालक इसके बाद कैलाश पर्वत पर पहुंच गया और वहां पहुंचने की कथा उसने भगवान महादेव को सुनाई। उस दिन से पार्वती जी शिवजी से विमुख हो गईं। देवी के रुष्ट होने पर भगवान शंकर ने भी बालक के बताए अनुसार गणेश का व्रत 21 दिनों तक किया। इसके प्रभाव से माता के मन से भगवान भोलेनाथ के लिए जो नाराजगी थी, वह समाप्त हो गई।

माता पार्वती का व्रत रखना

यह व्रत विधि भगवान शंकर ने माता पार्वती को बताई। यह सुनकर माता पार्वती के मन में भी अपने पुत्र कार्तिकेय से मिलने की इच्छा जाग्रत हुई। माता ने भी 21 दिन तक श्री गणेश व्रत किया और दूर्वा, पुष्प और लड्डुओं से श्री गणेश जी का पूजन किया। व्रत के 21वें दिन कार्तिकेय स्वयं पार्वती जी से आ मिले। उस दिन से श्री गणेश चतुर्थी का व्रत मनोकामना पूरी करने वाला व्रत माना जाता है।

ऐसे करें मूर्ती की स्थापना

गणेश चतुर्थी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और साफ कपड़े पहनें। यदि आप घर में मूर्ती स्थापना करने जा रहे हैं तो पहले अपने मंदिर को साफ कर लें। इसके बाद एक चौकी पर लाल रंग का कपड़ी बिछा दें। शुभ मुहूर्त में पूर्व या उत्तर दिशा में गणेशजी की मूर्ती की स्थापने करें। गणेश जी की प्रतिमा के बगल में रिद्धि-सिद्धि को स्थापित करें। अब गणेश जी को हल्दी, दूर्वा, इत्र, मोदक, चंदन अक्षत समेत सभी पूजन सामग्री चढ़ाएं।गणेश भगवान की प्रतिमा की पूर्व दिशा में कलश रखें और दक्षिण पूर्व में दीया जलाएं। अपने ऊपर जल छिड़कते हुए ? पुण्डरीकाक्षाय नमः मंत्र का जाप करें। भगवान गणेश को प्रणाम करें और तीन बार आचमन करें तथा माथे पर तिलक लगाएं। आसन के बाद गणेश जी को पंचामृत से स्नान कराएं। उन्हें वस्त्र, जनेऊ, चंदन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य और फल चढ़ाएं। गणेश जी की आरती करें और मनोकामना पूर्ति के लिए आशीर्वाद मांगे।

प्रसिद्ध गणपति मंदिर

शास्त्रों में भादों माह की गणेश चतुर्थी का विशेष महत्त्व बताया गया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान गणेश का जन्म हुआ था। इस अवसर पर लोग अपने घर गणेश जी की प्रतिमा को स्थापित करते हैं और दस दिनों तक बहुत धूमधाम से उनकी पूजा करते हैं। दसवें दिन अनंत चतुर्दशी पर गणपति की इन मूर्तियों का विसर्जन हो जाता है। सभी जानते हैं कि महाराष्ट्र सहित पूरे देशभर में गणेश चतुर्थी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। 10 दिन तक चलने वाले इस महोत्सव में शिव पुत्र गणेश की पूरे विधि विधान से पूजा होती है और आखिरी दिन उनका विसर्जन होता है। भगवान गणेश सभी देवों में प्रथम पूजनीय हैं। आइए भगवान गणेश जी के कुछ प्रसिद्ध मंदिरों के बारे में जानें।

अष्टविनायक मंदिर: इस गणेश चतुर्थी आप परिवार के साथ महाराष्ट्र स्थित अष्टविनायक मंदिर में दर्शन के लिए जरूर जाएं। इस मंदिर का विशेष महत्त्व है और यहां देश के कोने:कोने से श्रद्धालु आते हैं। गणेश चतुर्थी के दौरान यहां भगवान गणेश के दर्शन और पूजा करने को

बेहद शुभ माना जाता है और भक्तों की सभी मनोइच्छाएं पूरी होती हैं। वैसे भी गणपति उपासना के लिए अष्टविनायक मंदिरों का विशेष महत्त्व बताया गया है। ये मंदिर पुणे में स्थित है। अष्टविनायक का अर्थ आठ गणपति होता है। ये अष्टविनायक मंदिर मोरगांव में मयूरेश्वर, सिद्धटेक में सिद्धिविनायक, पाली में बल्ललेश्वर, लेन्याद्री में गिरिजात्मक, थुर में चिंतामणि, ओझर में विग्नेश्वर, रंजनगांव में महागणपति और अंत में महाद में वरद विनायक हैं। ये सभी मंदिर बेहद प्राचीन हैं। यह भगवान गणेश के स्वयंभू मंदिर है। मान्यता है कि इन स्थानों में भगवान गणेश स्वयं प्रकट हुए हैं।

चिंतामण गणेश मंदिर: भगवान गणेश का यह मंदिर महाकालेश्वर की नगरी उज्जैन में है। यहां देशभर से श्रद्धालु आते हैं। इस गणेश चतुर्थी पर आप अपने परिवार सहित यहां भगवान गणेश के दर्शन करने जा सकते हैं। यहां गर्भगृह में प्रवेश करते ही गणपति की तीन प्रतिमाएं दिखती हैं। पहली चिंतामण, दूसरी इच्छामन और तीसरी सिद्धिविनायक गणेश।

खजराना गणेश मंदिर: यह गणेश मंदिर मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में है। मान्यता है कि इस मंदिर में भगवान गणेश की प्रतिमा स्वयंभू है। देश के कोने:कोने से यहां गणेश भक्त दर्शन के लिए आते हैं। इस दौरान मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ एकत्रित होती है।

रणथंबौर गणेश मंदिर: यह गणेश मंदिर राजस्थान के रणथंबौर में है। देश और दुनिया से यहां भक्त भगवान गणेश के दर्शन के लिए आते हैं। यहां श्रद्धालु भगवान गणेश के त्रिनेत्र स्वरूप के दर्शन करते हैं। यह मंदिर करीब 1000 साल पुराना बताया जाता है। राजस्थान के रणथंभौर में बना यह गणेश मंदिर भारत में ही नहीं, दुनिया में पहला गणेश मंदिर माना जाता है। इस मंदिर में गणेश जी की त्रिनेत्री प्रतिमा विद्यमान है। यह प्रतिमा स्वयं भू प्रकट है। खास बात यह है कि राजस्थान का यह पहला गणेश मंदिर है, जहां गणपति जी का पूरा परिवार उनके साथ है। गणेश जी की पत्नी रिद्धि और सिद्धि और दो पुत्र शुभ:लाभ भी इस मंदिर में मौजूद हैं। दूर:दूर से लोग अपनी मनोकामना हेतु यहां दर्शन के लिए आते हैं।

डोडा गणपति मंदिर: डोडा गणपति मंदिर कर्नाटक के बंगलूर में है। दक्षिण भारत के सबसे अद्भुत मंदिरों में गणेश जी का डोडा गणपति मंदिर भी शामिल है। डोडा का अर्थ है बड़ा। अपने नाम के अनुरूप बंगलूर में स्थित इस मंदिर में गणेश जी की 18 फुट ऊंची और 16 फुट चौड़ी प्रतिमा है। इस प्रतिमा को काले ग्रेनाइट की एक ही चट्टान पर उकेर कर बनाया गया है। लोगों की इस मंदिर में अटूट श्रद्धा है।

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

प्रशंसा अहंकार को जन्म देती है आदमी की बुद्धि हर लेती है

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

मनुष्य नाम का प्राणी प्रशंसाप्रिय है। शायद बहुत ही कम ऐसे लोग होंगे जिन्हें प्रशंसा अच्छी नहीं लगती होगी। अन्यथा सब प्रशंसा के कायल है और फिर अहंकारी का तो कहना ही क्या। उसे तो प्रशंसा के मंत्र से ही प्रसन्न किया जा सकता है। शास्त्रकारों ने भी कहा है लोभी को धन से और अहंकारी को प्रशंसा से प्रसन्न कर सकते हैं। यह भी सत्य हैं प्रशंसा अहंकार को जन्म देती है आदमी की बुद्धि हर लेती है! प्रशंसा की कुछ ऐसी बनावट है जिसमें झूठ की मिलावट है। किसी क्रूर व्यक्ति को क्रूर कहना प्रशंसा नहीं है इसके उलट क्रूर को कोमल बताना प्रशंसा है। सज्जन को सज्जन कहने में क्या प्रशंसा हुई प्रशंसा तो तब है जब असज्जन को सज्जन कहा जाए। अर्थात बिना झूठ का मिश्रण किये प्रशंसा संभव नहीं है। इससे अहंकारी का तो अहंकार बढ़ता ही है बल्कि एक सामान्य व्यक्ति भी झूठ मिश्रित प्रशंसा सुनकर अहंकारी बनने लगता है। और यह तो स्वाभाविक है कि अहंकारी की बुद्धि बिगड़ती है और वो ऐसे कर्म में प्रवृत्त होने लगता है जो शास्त्रोक्त मर्यादाओं के सर्वथा विपरीत है। जिसके करने से औरों का ही नहीं अहंकारी का स्वयं का भी विनाश सुनिश्चित हो जाता है। तभी तो शास्त्रवेत्ता कहते हैं किसी के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत आनंदित मत होइए बल्कि और भी सावधान हो जाइये कि कहीं इससे तुम्हारे अंदर भी अहंकार का बीज़ अंकुरित न होने लगे। क्योंकि प्रशंसा से उत्पन्न अहंकार ले डूबता है। अंहकारी रावण दूसरों के मुख से प्रशंसा सुनने का तो आदि था ही वह स्वयं के मुख से भी स्वयं की प्रशंसा करता था। लंकायुद्ध के पहले प्रभुश्रीराम की आज्ञा से अंगद जब शांतिदूत के रूप में रावण के पास गये तो रावण अपनी शक्ति सामर्थ्य और सम्पन्नता का स्वयं अपने ही मुख से बखान करने लगा। तब अंगद ने रावण को समझाया कि जो लज्जावान होते हैं वह कभी अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा नहीं करते। अरे रावण ! तेरा ये अहंकार है जो प्रशंसा सुनकर और भी बढ़ रहा है। इससे बच। नहीं तो तेरा अहंकार तुझे जलाकर खाक कर देगा। अंततः वही हुआ। अहंकारी रावण अपने झूठे अहंकार के कारण अपना सर्वस्व खो बैठा।

पर्युषण पर्वः आत्म-ज्ञान का एक आध्यात्मिक मार्ग

हर कोई शांति और सुख से परिपूर्ण जीवन जीना चाहता है, लेकिन ऐसा जीवन जीना संभव नहीं हो पाता। इसीलिए जैन परंपरा में आध्यात्मिक पर्व पर्युषण मनाया जाता है, जो इस वर्ष दिगंबर दस लक्षण 16-25 सितंबर तक मनाया जाएगा। पर्युषण महापर्व के इन दस दिनों में सभी जैन भक्त अपने शरीर और मन को आध्यात्मिक बनाने का प्रयास करेंगे। जैन धर्म में पर्युषण पर्व का विशेष महत्व है। यह वह समय है जिसमें प्रत्येक जैन अपने मन को शुद्ध और उन्नत करने का प्रयास करता है। इसके लिए श्रावक को निम्नलिखित पाँच कर्तव्य निभाने चाहिए: अमारी प्रवर्तन (पूर्ण अहिंसा), सधार्मिक भक्ति (समान धर्म के लोगों की सहायता करना),क्षमादान (क्षमा मांगना), अथम तप (तीन दिन का उपवास) और चैत्य परिपाती (स्थानीय जैन मंदिरों में दर्शन करना)। इन आठ दिनों में एक सकारात्मक वातावरण बनेगा, जो हमारे जीवन को शुद्ध करेगा। इस दृष्टि से, यह पर्व आध्यात्मिकता के साथ-साथ जीवन के उत्थान का भी पर्व है। पर्युषण महापर्व अंतर्मन की उपासना का माध्यम है-यह आत्म-शुद्धि और आत्म-ज्ञान का पर्व है। वास्तव में, पर्युषण महापर्व वह भोर है जो हमें नींद से जागृति की ओर ले जाती है। यह पर्व हमें अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर अग्रसर करता है। तपस्या, जप और आत्म-अध्यन के द्वारा हम अपनी आंतरिक शक्ति को पा सकते हैं और यह जान सकते हैं कि सच्चा सुख क्षमा करने में निहित है।

पर्युषण महापर्व का शाब्दिक अर्थ है आत्मा में निवास करना। पर्युषण का एक अर्थ कर्मों का नाश करना भी है। बुरे कर्म नष्ट हो जाते हैं और तभी आत्मा अपने स्वाभाविक रूप में शुद्ध होती है, इसलिए पर्युषण महापर्व आत्मा को निस्वार्थ और शुद्ध होने की प्रेरणा देता है। यह महापर्व मुख्य रूप से मनुष्य और मनुष्य के बीच संबंध पर केंद्रित है और उन्हें प्रेरित करता है; यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों और दरवाजों को खोलने का त्योहार है। पर्युषण महापर्व केवल जैन धर्म का त्योहार नहीं है, बल्कि यह एक सार्वभौमिक त्योहार है। यह समस्त विश्व के लिए एक महान और उत्कृष्ट त्योहार है, क्योंकि इसमें आत्मा की पूजा की जाती है। यह विश्व का एकमात्र ऐसा त्योहार है जिसमें व्यक्ति आत्म-मग्न होकर आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करता है और अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर तक पहुँचकर मोक्ष की प्राप्ति का प्रयास करता है। जैन धर्म की त्याग-प्रधान संस्कृति में पर्युषण महापर्व का अपना अनूठा और विशेष आध्यात्मिक महत्व है। यह आत्म-शुद्धि का एकमात्र प्रेरक त्योहार है। यह

जैन धर्म में सबसे अधिक मान्यता प्राप्त त्योहार है। पर्युषण महापर्व के अवसर पर जप, तपस्या, साधना, पूजा, ध्यान, उपवास आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान किए जाते हैं।

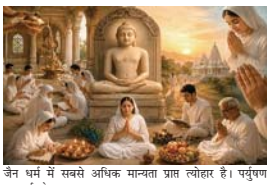

पर्युषण महापर्व एक आध्यात्मिक पर्व है, जिसका केंद्र बिंदु आत्मा है। पर्युषण महापर्व आत्मा के शुद्ध, प्रकाशमान रूप को प्रकट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्यात्म का अर्थ है आत्मा के निकट होना। पर्युषण महापर्व जैन एकता का प्रतीक है। जैन लोग इसे अत्यंत महत्व देते हैं। इस पर्व के अवसर पर संपूर्ण जैन समाज जागृत होकर आध्यात्मिक साधना में लीन हो जाता है। दिगंबर परंपरा में इसे दश लक्षण पर्व के रूप में जाना जाता है। इनमें इसका आरंभ भाद्र शुक्ल पंचमी से होता है और समृद्धि का दिन चतुर्दशी है। वहीं श्वेतांबर जैन परंपरा में भाद्र शुक्ल पंचमी समाधि का दिन है, जिसे पूर्ण त्याग, उपवास, आत्म-अध्ययन और संयम के साथ संवत्सरी के रूप में मनाया जाता है। यहां तक कि जो लोग वर्ष के दौरान समय नहीं निकाल पाते, वे भी इस दिन जागृत होते हैं। यहां तक कि जो लोग कभी उपवास नहीं करते, वे भी इस दिन अनुष्ठान करते हुए देखे जाते हैं। पर्युषण महापर्व का उद्देश्य मन और आत्मा के सभी बुरे विचारों का नाश करना है। धर्म के दस द्वारों का उल्लेख किया गया है, जिनमें पहला द्वार क्षमा है। क्षमा का अर्थ है समानता। जीवन के लिए क्षमा अत्यंत महत्वपूर्ण है, जब तक जीवन में क्षमा न हो, तब तक व्यक्ति आध्यात्मिकता के मार्ग पर प्रगति नहीं कर सकता। भगवान महावीर ने क्षमा यानी समानता का जीवन व्यतीत किया। परिस्थिति चाहे जो भी हो, वे सभी परिस्थितियों में समान रहे। क्षमा वीर का रत्न है - केवल महान व्यक्ति ही क्षमा ले और दे सकते हैं। पर्युषण महापर्व क्षमा के आदान-प्रदान का उत्सव है। इस दिन सभी अपने मन की उलझी हुई ग्रंथियों को खोलते हैं, अपने भीतर के क्रोध और घृणा की गांठों को मुक्त करते हैं, एक-दूसरे को गले लगाते हैं। क्षमा के माध्यम से अतीत की गलतियों को मिटाकर जीवन को पवित्र बनाते हैं। पर्युषण महापर्व के समापन को क्षमा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस प्रकार, पर्युषण महापर्व और क्षमा दिवस-एक ऐसा उत्सव है जो एक-दूसरे को करीब लाता है। यह एक ऐसा त्योहार है जिसमें हम एक दूसरे को अपना मानते हैं। गीता में भी यही कहा गया है-आत्मौपम्येन सर्वत:: समे पश्यति योर्जुन-श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन! मनुष्य को अपने समतुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा-मित्ति मै सव्वा भूएषु, वेरन्म्झना केनै- मैं सभी प्राणियों से मित्रता रखता हूँ; किसी से शत्रुता नहीं रखता।

वर्ग पहेली 2961

AMRITA NANDANWAR Mob 09822568532

बायें से दायें:- 1) नाता; संबंध, 2) निर्दोष, 4) एक संख्या, 6) शिखर, 7) चूर्ण, 8) भले बुरे का ज्ञान, 9) दूरी, 11) सारा, 13) जलीय अंश, 15) डाँटना, 16) अहंकारयुक्त आवेश, 18) झगड़ा, 19) वंश, 21) दोष निकालना, 24) बायाँ, 26) यह नहीं, 28) मधुर मंद हास्य, 31) बानगी, 32) घटोत्तरी; नाश, 33) तक.

ऊपर से नीचे:- 1) यथार्थता, 2) पुत्री, 3) मिथ्या बोध, 4) कलई, 5) पूर्णतया, 6) भूसा, 10) किसी बात की धुन; लगन, 12) तैयार करना, 14) कुल, 17) जंगल में रहना, 20) जोड़ का, 22) नूतन, 23) शारीरिक श्रम, 25) आसीन, 27) स्त्रियों का सा, 28) घूँसा, 29) विचार; मत, 30) किसी वाहन का छत.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

गे	जु	बा	न	■	दा	न	वी	र	■
ह	■	■	प्र	का	व	ट	■	बी	न
न	सी	ब	■	म	त	■	रं	■	जु
त	■	ल	इ	का	■	अ	ज	ग	र
■	बे	वा	■	ज	रा	■	■	र	■
च	ल	न	■	■	स	म	झ	दा	र
म	न	■	जी	च	■	त	ट	■	ह
च	■	र	■	प	रि	दा	■	आ	म
ग	हा	भा	र	त	■	न	सी	ह	त

दैनिक सचएक्सप्रेस पंचांग

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

सोमवार 14 सितंबर 2026
सूर्योदय- प्रातः 6:02 बजे
सूर्यास्त- शाम 6:19 बजे
चंद्रोदय - 9:03
चंद्रास्त - 8:24
शक संवत् - 1948 पराभव
विक्रम संवत - 2083 रोद्र
पूर्णिमांत महीना- भाद्रपद
पक्ष - शुक्ल
तिथि - तृतीया सुबह 7:05 तक पश्चात् चतुर्थी।
नक्षत्र - चित्रा दोपहर 3:05 पश्चात् स्वाती
योग - ब्रह्म दिन 12:50 तक पश्चात् इंद्र
करण - गर सुबह 7:11 तक पश्चात् वणिज
सूर्य राशि - सिंह
चंद्र राशि - तुला

शुभांक 1-2-3

मेष

दिन अनुकूल प्रभावकारी। कार्य क्षेत्र में उन्नति कारक योग,पर थोड़ी सजगता बरतें। घर परिवार में आपसी तालमेल उत्तम। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग - सफेद।

वृष

दिन सामान्य। कार्य की अधिकता रहेगी। धैर्य से काम लेवे। किसी से अनावश्यक वाद-विवाद न करें, अन्यथा भविष्य में हानि सम्भव। शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ अंक- 4, शुभ रंग - भूरा।

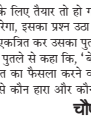

मिथुन

भाग्य गत अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। मन मस्तिष्क उत्साहवर्धक। परिवार में उत्तम सामंजस्य, जिससे अच्छे योग संयोग सम्भव। शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक - 5, शुभ रंग- नीला।

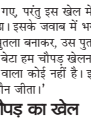

कर्क

स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। यात्रा के योग बन सकते हैं। पर अकेले यात्रा न करें। परिवार में थोड़ी गलतफहमी हो सकतीं हैं। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- पीला।

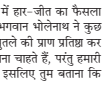

सिंह

दिन शुभ। परिवार में आगामी मांगलिक कार्य की योजना बन सकती है। व्यापारी वर्ग के लिए दिन अच्छा। कोई डील आज कर सकते हैं। शिवजी को मखाने अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- लाल।

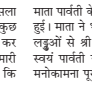

कन्या

संतान क्षेत्रीय उत्तम योग। कालेज स्तरीय विद्यार्थियों को अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारी अच्छे से निर्वाह कर पाएंगे। शिवजी को जल और दूध का मिश्रण अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- नीला।

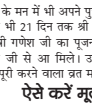

तुला

किसी से मित्रता सम्भव, पर अत्यधिक भरोसा न करें। विद्यार्थियों को उत्तम अवसर प्राप्त हो सकते हैं। विवाह योग्य जातकों को अच्छे प्रस्ताव प्राप्ति सम्भव। शिवजी को अबीर मिश्रित जल अर्पित करें। शुभ अंक - 8, शुभ रंग- लाल।

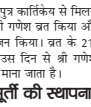

वृश्चिक

भूमि भवन संबंधी लम्बित मामले आज आपके पक्ष में सुलझ सकतें हैं।कोई नया निवेश कर सकते हैं। शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ अंक- 7, शुभ रंग- नीला।

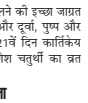

धनु

भाई बहनों से सहयोग प्राप्त होगा। जिससे मन मस्तिष्क तरोताजा होगा। व्यापारी वर्ग थोड़ा सतर्क रहें। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- नीला।

मकर

परिवार में विशेष शुभ मांगलिक कार्य सम्भव। भूमि भवन संबंधी लाभकारी योग। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 7, शुभ रंग - नीला।

कुंभ

दिन शुभ। अचानक धन संबंधी लाभकारी अवसर। परिवार में शुभता। कार्य क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग प्राप्ति योग। शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ रंग- 9, शुभ रंग- नीला।

मीन

भाई बहनों से सहयोग। कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति योग। व्यापारी वर्ग भी लाभान्वित। विवाह योग्य जातकों को आज अच्छे प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं। शिव जी को जल और काला तिल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - पीला।

ग्रह स्थिति
सूर्य- सिंह राशि में, ता. 17 की रात्रि 11:41 से कन्या राशि में। मंगल- मिथुन राशि में, ता. 18 की दोपहर 3:07 से कर्क राशि में प्रवेश। बुध- सिंह राशि में, ता. 7 के दिन 1:03 से कन्या राशि मे, ता. 26 के दिन 12:42 से तुला राशि में। गुरू- कर्क राशि में। शुक्र - कन्या राशि में, ता.1 के रात्रि अंत 4:59 से तुला राशि में। शनि- मीन राशि मे वक्री। राहु- कुंभ राशि में। केतु- सिंह राशि में।

दिशा शूल
पूर्व दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर दूध का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया
अमृत सुबह 6:00-7:30 तक
शुभ सुबह 9:00-10:30 तक
चर दिन 1:30-3:00 तक
लाभ दोपहर 3:00-4:30 तक
अमृत अपराह्न 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त
सुबह 11:55 से दिन 12:19 तक !

सर्वार्थ सिद्धि योग
ता. 1 को सूर्योदय से देर रात्रि 3:10 तक। ता.7 शाम 6:10 से रात्रि अंत तक। ता. 8 को अपराह्न 4:53 से रात्रि अंत तक। ता. 13 को सूर्योदय से दिन 2:15 तक। ता. 16 को शाम 6:14 ता. 17 की रात्रि 8:25 तक। ता. 27 को सूर्योदय से दिन 12:01 तक। ता.29 को सूर्योदय से दिन 11:00 तक। ता. 30 को सुबह 9:57 से रात्रि अंत तक।

पुष्य नक्षत्रः ता. 7 की शाम 6:10 से ता. 8 की अपराह्न 4:43 तक।

त्रिपुष्कर योग - ता. 12 को सुबह 7:33 से दिन 1:54 तक।

रवि योग
रवियोगः ता.3 की रात्रि 1:47 से ता. 4 की रात्रि 12:33 तक। ता. 13 के दिन 1:11 से ता. 15 की दोपहर 3:25 तक। ता. 16 की शाम 5:26 से ता. 17 की रात्रि 7:57 तक। ता. 20 की रात्रि 1:47 से ता.22 की सुबह 6:13 तक। ता. 24 की सुबह 10:39 से ता. 25 की सुबह 11:26 तक।

अमृत सिद्धि योगः ता. 1 को सूर्योदय से रात्रि 3ः10 तक।ता. 13 के सूर्योदय से दिन 2ः15 तक। ता. 16 को शाम 6ः14 से रात्रि अंत तक। ता. 29 को सूर्योदय से दिन 11ः00 तक।